पंजीयन-प्रपत्र

प्राध्यापकगण/शोधार्थी पंजीकरण के लिए पंजीकरण प्रपत्र वेबसाईट **www.pssou.ac.in** से डॉउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण हेतु पंजीकरण प्रपत्र की छायाप्रति का उपयोग किया जा सकता है। भरा हुआ पंजीकरण प्रपत्र पंजीयनकर्ता के पास अनिवार्यत: जमा करें।

पंजीयन नि:शुल्क है।

- पंजीकृत प्रतिभागियों की तीन दिवस (संगोष्ठी अवधि) उपस्थिति अनिवार्य है।
- प्रत्येक पंजीकृत प्रतिभागी को निदेशालय द्वारा प्रदत्त एक बैग, पैड, पेन, कार्यक्रम अनुसूची तथा तीन दिवस दोपहर का भोजन नि:शुल्क उपलब्ध कराया जायेगा।
- पंजीकृत प्रतिभागियों को यात्रा-व्यय देय नहीं होगा और न ही आवास उपलब्ध कराया जाएगा।
- प्रमाण-पत्र पंजीकृत प्रतिभागियों को ही प्रदान किया जाएगा।

विषय विशेषज्ञ

प्रो. ए. आर. अरविंदाक्षन, वरिष्ठ आलोचक-कवि, केरल
डॉ. श्रीराम परिहार, ललित निबंधकार, खंडवा
प्रो. टी. एन. शुक्ला, साहित्यकार एवं समीक्षक, जबलपुर
डॉ. राजेन्द्र मिश्र, वरिष्ठ साहित्यकार एवं समीक्षक, रायपुर
डॉ. सुशील त्रिवेदी, संपादक, छत्तीसगढ़-मित्र, रायपुर
श्री रमेश नैयर, वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार, रायपुर
डॉ. कनक तिवारी, वरिष्ठ अधिवक्ता एवं साहित्यकार, दुर्ग
प्रो. चित्तरंजन कर, प्राध्यापक, लेखक, रायपुर
डॉ. अरुण होता, साहित्यकार, कोलकोता
प्रो. आनंद त्रिपाठी, प्राध्यापक-लेखक, सागर
श्री नंदकिशोर तिवारी, साहित्यकार-लेखक, बिलासपुर
प्रो. के.के. सिंह, प्राध्यापक, वर्धा
श्री गिरीश पंकज, वरिष्ठ व्यंग्यकार, रायपुर
प्रो. शैल शर्मा, प्राध्यापक, रायपुर
प्रो. तीर्थेश्वर सिंह, प्राध्यापक-लेखक, अमरकंटक
डॉ. सुधीर शर्मा, प्राध्यापक-लेखक, भिलाई
डॉ. नीरज खरे, प्राध्यापक-लेखक, बनारस
डॉ. रवीन्द्र कात्यायन, प्राध्यापक-लेखक, मुंबई

संरक्षक

प्रो. बंश गोपाल सिंह
कुलपति, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सह-संरक्षक

डॉ. राजकुमार सचदेव
कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़, बिलासपुर

परामर्शदाता

प्रो. के.एल. वर्मा
पूर्व निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

आयोजन समिति

डॉ. बी. एल. गोयल	- 7898484846
डॉ. बीना सिंह	- 9425564509
डॉ. अनिता सिंह	- 9827118808
डॉ. प्रकृति जेम्स	- 9993450848
डॉ. गौरी शर्मा	- 9425566014
डॉ. प्रीती रानी मिश्रा	- 9425517530
श्री रेशम लाल प्रधान	- 810385456
श्री संजीव कुमार लवानियाँ	- 8476985418
डॉ. एस. रूपेन्द्र राव	- 9993924404
डॉ. पुष्कर दुबे	- 7024289666

प्रति,

तीन दिवसीय

राष्ट्रीय-संगोष्ठी

24-26 अगस्त, 2017

हिंदी के बहुप्रयुक्त रूप : वैज्ञानिकता एवं संभावनाएँ

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
उच्चतर शिक्षा विभाग, नई दिल्ली
तथा

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़, बिलासपुर के संयुक्त तत्वावधान में

आयोजक

हिंदी-विभाग
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

संयोजक
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
विभागाध्यक्ष, हिंदी
मोबा. 9229703055

सह-संयोजक
डॉ. रुचि त्रिपाठी
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान
मोबा. 9415880815

विश्वविद्यालय परिचय:

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर की स्थापना छत्तीसगढ़ शासन के अधिनियम क्रं. 26/2004 द्वारा की गई है। विश्वविद्यालय का नाम स्वतंत्रता सेनानी, अहिंसावादी, समता एवं सामाजिक न्याय के युगपुरुष एवं 'छत्तीसगढ़ के गाँधी' के नाम से सुविख्यात पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (1881-1940 ई.) के नाम पर है। यह एक शासकीय राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है जिसका कार्यक्षेत्र संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य है। विश्वविद्यालय का मुख्यालय बिलासपुर, छः क्षेत्रीय-केंद्र: रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, अम्बिकापुर, जशपुर, जगदलपुर तथा एक उप-क्षेत्रीय कार्यालय कांकेर है। विश्वविद्यालय के संपूर्ण छत्तीसगढ़ में 180 अध्ययन-केंद्र संचालित हैं जिनमें वनांचल बस्तर (अबूझमाड़) सरगुजा, जशपुर जैसे दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों के विद्यार्थी भी अध्ययनरत् हैं। विश्वविद्यालय इन केंद्रों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा-प्रणाली के आधार पर गुणवत्तायुक्त उच्च-शिक्षा प्रदान कर रहा है।

बिलासपुर:

यह राज्य का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, यहाँ छत्तीसगढ़ राज्य का उच्च न्यायालय है। इसे न्याय और संस्कारधानी के नाम से भी जाना जाता है। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का मुख्यालय बिलासपुर में है। शिष्टाचार और आतिथ्य के लिए तत्पर इस समृद्ध शहर की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और प्राकृतिक सुंदरता की अनुपम छटा देखने लायक है।

पर्यटन स्थल:

- रतनपुर (माँ महामाया मंदिर) 26 कि.मी.।
- तालागाँव (प्राचीन देवरानी-जेठानी मंदिर) 40 कि.मी.,
- मल्हार (पातालेश्वर, डिडनेश्वरी मंदिर) 40 कि.मी.
- चैतुरगढ़ (छत्तीसगढ़ का कश्मीर) 65 कि.मी.,
- गिरौदपुर (संत गुरुघासीदास की जन्मस्थली), जैत खांभ (कुतुब मीनार से ऊँचा) 62 कि.मी.।

पहुँच मार्ग :

- सड़क/रेल: बिलासपुर, रेल/सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। मुम्बई-नागपुर-हावड़ा रेल-मार्ग पर स्थित है, समीप ही रेलवे स्टेशन उस्लापुर भी है।
- हवाई मार्ग : निकटतम हवाई अड्डा (स्वामी विवेकानंद हवाई अड्डा) रायपुर है जिसकी बिलासपुर से दूरी लगभग 125 कि.मी. है।

संगोष्ठी शीर्षक के विषय में:

जनं विभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथ्वी यथौकसम्

(अर्थववेद, पृथ्वी सूक्त 12.1.45)

अर्थात् इस पृथ्वी पर अनेक भाषा-भाषी और विभिन्न धार्मिक मान्यताओं वाले लोग रहते हैं, फिर भी-

भूमि: पुत्रो: अहं पृथिव्या:

(अर्थववेद, पृथ्वी सूक्त 12.1.12)

अर्थात् यह धरती हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। जाति, धर्म, वर्ग, पंथ, प्रांत, संस्कृति अलग होते हुए भी हम सब एक हैं। क्योंकि हम विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम' मानते हैं, और हम सब इस वैदिक ऋचा अनुरूप मानवीय आधार पर प्राणी मात्र की सेवा के लिए दृढ़ संकल्पित है।

यह सत्य है कि भाषा विचाराभिव्यक्ति के लिए जितनी महत्त्वपूर्ण है उतनी ही राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए भी आवश्यक है। हिंदी की उच्चारण और लेखन एकरूपता आज प्रत्येक भारतवासी के चिंतन-मनन और अखंड भारत की अवधारणा के लिए प्राण ऊर्जा है। हिंदी केवल कार्यालयीन भाषा नहीं है बल्कि हमारी संस्कृति की वाहक है। इसलिए जहाँ-जहाँ माँ भारतीय पुत्र/पुत्रियाँ निवासरत् हैं, वहाँ-वहाँ हिंदी भाषा और संस्कृति प्रसारित हो रही है। हिंदी भाषा भारत सहित नेपाल, भूटान, पाकिस्तान, मलेशिया, बांग्लादेश, मॉरिशस, सूरीनाम, फ़िजी, गयाना, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, यमन, युगांडा, सिंगापुर, न्यूजीलैंड, जर्मनी, आस्ट्रेलिया तथा विश्व के अन्य देशों में हिंदी बोलने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

हिंदी भाषा और लिपि तकनीकी दृष्टि से सुसंपन्न है। हिंदी तकनीकी विषयों, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, अंतरिक्षविज्ञान, खगोलविज्ञान इत्यादि में भी प्रयुक्त हो रही है। हिंदी तकनीकी उन्नति के समनान्तर लोगों के दैनिक जीवन के सुचारु संचालन के लिए हिंदी सरल, सहज और ग्राह्य भाषा बन गई है, हिंदी के तकनीकी विकास की अपार संभावनाएँ हैं। यही कारण है कि वर्तमान में पूरे विश्व में हिंदी भाषा बोलने-समझने-लिखने वालों की जीवन रेखा बन रही है और हम कह रहे हैं कि अब हिंदी विश्वभाषा बन सकती है। इसी तरह संपूर्ण भारत में आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं (असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, मैथिली, संथाली, डोगरी, और बोडो) सहित अन्य क्षेत्रीय बोलियाँ प्रचलित हैं जो जनसामान्य के संप्रेषण का प्रमुख माध्यम हैं। इन भाषा और बोलियों में प्रचुर मात्रा में लोक-साहित्य है। ये भाषा और बोलियाँ भारतीय जनमानस में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। कई शब्द तो ऐसे हैं जो तकनीकी एवं ध्वन्यात्मक रूप से प्रतिरूप से लगते हैं जैसे- अँग्रेज़ी का मॉउस कई राजभाषाओं और बोलियों में मूस (भोजपुरी), मूस व मूसवा (छत्तीसगढ़) बोला जाता है।

संगोष्ठी का उद्देश्य :

हिंदी के बहुप्रयुक्त रूप : वैज्ञानिकता एवं संभावनाएँ विषयक प्रस्तावित तीन दिवसीय राष्ट्रीय-संगोष्ठी में हिंदी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषा एवं साहित्य की वैज्ञानिकता और तकनीकी सहित उनके साहित्यिक रूपों पर सारगर्भित व्याख्यान/शोध-पत्र/आलेख-वाचन तथा चर्चा-परिचर्चा भाषाओं और बोलियों के उन्नयन को नई दिशा मिले, और हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता एवं तकनीकी संभावनाओं की सुनिश्चित कार्य-योजना बनाने में सहायता मिल सकेगी।

प्रस्तावित विषय-वस्तु:

- ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी।
- अखंड भारत और हिंदी।
- धर्म, पंथ, प्रांत, और राष्ट्रीय एकीकरण में हिंदी।
- समाज, संस्कृति, तथा राष्ट्रीय पहचान में हिंदी का योग।
- लोक संस्कृति, साहित्य में हिंदी का रूप।
- भारतीय शिक्षा का स्वरूप और हिंदी।
- हिंदी का वैश्विक परिदृश्य।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी, चिकित्सा, विधि, तथा प्रबंधन, पत्रकारिता में हिंदी।
- सूचना प्रौद्योगिकी का विकास और हिंदी।
- अंतरराष्ट्रीय राजनैतिक, कूटनैतिक, व्यावसायिक संबंधों में हिंदी।
- 21 वीं शताब्दी में हिंदी का स्वरूप, और उसके तकनीकी पक्ष।

शोध-पत्र/आलेख/पंजीकरण

इच्छुक प्रतिभागी अपना शोध-पत्र/आलेख सारांश हिंदी में (**Kruti Dev 010 Font Size-14**) 300 शब्दों में **seminarchdhindi2017@gmail.com** पर 18 अगस्त, 2017 तथा पूर्ण शोध-पत्र/आलेख 20 अगस्त, 2017 सायं 5.30 बजे तक भेजें। 20 अगस्त, 2017 पश्चात् प्राप्त शोध-पत्र/आलेख पर विचार नहीं किया जाएगा। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे शोध-पत्र/आलेख प्रेषण की सूचना डॉ. रुचि त्रिपाठी, दूरभाष 9415880815 पर अनिवार्यत: देंवे। शोध-पत्र/ आलेख मौलिक होना चाहिए। पंजीकृत (चयनित) प्रतिभागियों की अंतिम सूची 22 अगस्त, 2017 को जारी की जाएगी।